17 जून 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/– आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 6 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित –

53वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1800 से अधिक आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रातः 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 65 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना।

सूरत (गुज.) : यहाँ रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, दिनांक 5 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं अपूर्व अवसर शिविरों की शृंखला में निजात्मकल्याण आध्यात्मिक शिविर समिति द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 53वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

प्रातःकालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा सहजता एवं तत्त्वचिंतन विषय पर हुआ।

रात्रिकालीन प्रवचन – ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा अनेकांत-स्याद्वाद, नयों का दैनिक जीवन में प्रयोग विषय पर प्रतिदिन प्रवचनों के पूर्व डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई आदि विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, डॉ. नेमचंदजी खतौली, पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित नितिनजी शास्त्री सूरत, पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि विद्वानों के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने ली।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के निर्देशन में सर्वश्री निखलेशजी दलपतपुर, आलोकजी कारंजा, निलयजी आगरा, अशोकजी इन्दौर, विनीतजी ग्वालियर, मनीषजी सिद्धांत, मनीषजी कहान, गणतंत्रजी आगरा, राजेन्द्रजी खड़ैरी, महावीरजी मांगुलकर, संदीपजी डडूका, संतोषजी बकस्वाहा, जिनेशजी मुम्बई, रूपेन्द्रजी जयपुर, जिनकुमारजी जयपुर, अविनाशजी कोलारस, विनीतजी हटा, श्रीशांतजी, अच्युतकांतजी, गौरवजी जयपुर, वीतरागजी, विदुषी अध्यात्मप्रभाजी मुम्बई, विदुषी लताजी देवलाली, विदुषी रंजनाजी अमलाई, विदुषी प्रतीति पाटील जयपुर, विदुषी मोना भारिल्ल जयपुर, विदुषी स्तुतिजी जयपुर, विदुषी ज्योतिजी कारंजा आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रातःकालीन प्रौढकक्षायें – प्रातः 5.30 से 6.20 तक प्रौढ कक्षायें पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित कमलचंद पिड़ावा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, ब्र. निखिलभैया खनियांधाना आदि विद्वानों द्वारा ली गई।

प्रौढ कक्षायें – मुख्य प्रवचन के पश्चात् प्रातः मतिज्ञान का स्वरूप व भेदप्रभेद विषय पर कक्षा ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा, दोपहर में नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व गुणस्थान विवेचन की कक्षा पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा ली गई।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन अनेक कक्षाओं का आयोजन हुआ, जिसका संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

सम्पादकीय –

धर्म, परिभाषा नहीं प्रयोग है

2

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि भूमिकानुसार ज्ञानी जीवों को भी अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान एवं संज्वलन कषाय सम्बन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ की ३ चौकड़ी विद्यमान हैं। इन कषायों का सद्भाव होने से आकुलता होना अस्वाभाविक नहीं है, पर्याय की कमजोरी से इन्कार भी नहीं किया जा सकता। क्षायिक समकिती भरत-बाहुबलि, राम-लक्ष्मण आदि के उदाहरण शास्त्रों में देखे जा सकते हैं। जितनी कषाय विद्यमान है, तज्जनित अशान्ति व आकुलता होगी ही, किन्तु जब नारकी भी पर्याय जनित अनंत प्रतिकूलता में समता-रसपान कर सकते हैं तब हमें भी उनसे प्रेरणा लेनी होगी। दौलतरामजी का एक भजन है जिसमें समकिती नारकी का चित्र प्रस्तुत किया गया है –

''ऊपर नारकिकृत दुःख भोगे, अन्तर सम रस, गटा-गटी।
चिन्मूरत दृग धारी की मोहि, रीति लगत कुछ अटा-पटी।।''

तब हमें वैसी प्रतिकूलता तो नहीं है। ऐसा विचार कर समता, शान्ति व धैर्य धारण करना चाहिये। ये भी एक विचारात्मक-विकल्पात्मक प्रयोग है। यदि अज्ञानी की तरह हमारे अन्तर में भी वैसा ही विलाप, हाय-हाय, आकुलता, संक्लेशरूप आर्तरौद्र ध्यान चलता रहे तो हमारे वे सिद्धान्त क्या कोरी परिभाषायें ही बनकर नहीं रह जायेंगे? प्रतिकूल प्रसंग हमारे लिए परीक्षा की घड़ी हैं, खरे-खोटे की परख के लिए कसौटी है।

आत्मानुभवी जीव का पुरुषार्थ, श्रद्धा के बल पर निरंतर समता की ओर होता है, ज्ञानाभ्यास तो जितना हो अच्छा ही है; परन्तु ज्ञान की सार्थकता सफलता प्रयोग में ही है। इस प्रयोग की प्रारंभिक भूमिका में बाह्याचरण रूप में तो लोकाचार विरुद्ध अन्याय-अनीति अभक्ष्यादि भक्षण से बचाव रूप होता है। धीरे-धीरे कालान्तर में विशुद्धि के अनुसार संयम की भूमिका भी आती है। इस तरह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता हुआ पुरुषार्थी जीव कालान्तर में पूर्णता को अवश्य ही प्राप्त होगा। इसमें देर हो सकती है, पर अन्धेर नहीं।

हम सब लोग इस प्रकार सही स्वरूप को समझकर उसे जीवन में उतारें और शीघ्र ही पूर्णता को प्राप्त हो, यह पवित्र भावना है। ●

संकल्प दिवस के रूप में मनाया डॉ. भारिल्ल का जन्मदिन

सूरत (गुज.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 25 मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का जन्मदिन संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर पूरे देश में फैले उनके हजारों शिष्यों में से बड़ी संख्या में शास्त्री विद्वान उपस्थित हुए व सभी ने आजीवन इस वीतरागी तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की शपथ ली।

कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित कमलचंदजी, प्रशिक्षण शिविर के सभी अध्यापकगण, उपस्थित सभी स्नातक विद्वान, श्री अजितजी दिल्ली, श्री आदीशजी दिल्ली, श्री एस.एल. गंगवाल जयपुर, श्री संजयजी दीवान, श्री वीरेशजी कासलीवाल, श्री प्रकाशजी छाबड़ा आदि अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा आदि स्नातकों द्वारा तिलक एवं माल्यार्पण तथा श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा साफा पहनाकर एवं आचार्य कुन्दकुन्द की प्रतिकृति पीयूषजी शास्त्री, रूपेन्द्रजी शास्त्री, निकलेशजी शास्त्री, गणतंत्रजी शास्त्री द्वारा स्नातक परिषद् की ओर से भेंटकर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सम्मान किया गया। सूरत के सभी ट्रस्टियों द्वारा तिलक, माला व साफा पहनाकर भारिल्लजी का सम्मान किया गया। इसके अतिरिक्त अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने सभी स्नातकों को आजीवन तत्त्वप्रचार का संकल्प दिलाया।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भारिल्ल ने कहा कि जन्मदिन तो उनके मनाये जाते हैं, जिन्होंने इस जन्म मरण का नाश कर दिया है; ये तो संकल्प का दिन है। हमने भी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के देहावसान पर यह संकल्प लिया था – ''जब तक यह देह रहेगी तब तक जिनशासन के इस तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुंचायेंगे और आज भी संकल्पित हैं। यही कार्य मेरे 1000 शिष्य कर रहे हैं, जिससे पंचम काल के अन्त तक जिनशासन की यह पवित्र ध्वजा लहराती रहेगी।''

सभा का संचालन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

बीना (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर चैतन्यधाम के तत्त्वावधान में 7वाँ जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 1 से 7 जून तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अशोकजी राघौगढ, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, पण्डित अपूर्वजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 350 बच्चों के अतिरिक्त 100 साधर्मियों ने लाभ लिया। श्रुतपंचमी के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

खण्डवा (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा आयोजित 13वें बाल संस्कार शिविर दिनांक 23 से 31 मई तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आकेशजी जैन उभेगांव एवं विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली के व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित प्रयंकजी शास्त्री खुरई एवं पण्डित अक्षतजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा बाल कक्षाओं का संचालन किया गया। शिविर में जिनेन्द्र पूजन, भक्ति, प्रवचन, विभिन्न कक्षाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से जैन सिद्धांतों का ज्ञान कराया गया। प्रोजेक्टर पर विभिन्न प्रेरणादायी वीडियो सी.डी. का भी प्रदर्शन किया गया।

पूना (महा.) : यहाँ एच.एन.डी. जैन बोर्डिंग में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 5 से 9 जून तक प्रथम जिनदेशना बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी जबलपुर के प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री सांगली, पण्डित अमोलजी शास्त्री नांदेड, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित अनुभवजी जैन पुणे द्वारा विभिन्न विषयों की कक्षाएं ली गई। स्थानीय विद्वान पण्डित शांतिनाथजी शास्त्री द्वारा प्रभावशाली तरीके से अंग्रेजी की धार्मिक कक्षा ली गई। दिनांक 7 जून को श्रुतपंचमी के अवसर पर जिनवाणी की शोभायात्रा एवं पूजन हुई। साथ ही पण्डित विरागजी द्वारा श्रुत के अवतरण की कक्षा की आकर्षक प्रस्तुति भी की गई।

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 1 से 7 जून तक 11वें बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित कमलेशजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित नीलेशजी शास्त्री घुवारा, पण्डित अखिलेशजी शास्त्री घुवारा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री घुवारा, पण्डित रत्नेशजी शास्त्री भगवां, पण्डित अक्षयजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित जीवेशजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित रोहितजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी जैन एवं डॉ. ममता जैन उदयपुर का समागम प्राप्त हुआ। शिविर में जिनेन्द्र पूजन, भक्ति, प्रवचन व कक्षाओं के माध्यम से बालकों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

उदयपुर (राज.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान एवं शाश्वत धाम के सहयोग से दिनांक 5 से 9 जून तक आवासीय बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्रीडॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित जयेशजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित नीलेशजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 140 बच्चों ने लाभ लिया।

दीक्षांत व समापन समारोह संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 5 जून को प्रात: श्री जिनेन्द्र अभिषेक, नित्यनियम पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् शिविर का दीक्षांत एवं समापन समारोह श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि श्री संजयजी दीवान, श्री प्रकाशचंदजी छाबड़ा, समस्त अध्यापकगण, विद्यालयों के अधीक्षकगण एवं ट्रस्ट के सभी पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

प्रशिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने दी। पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने दीक्षांत भाषण में कहा कि यह दीक्षा का अंत है, शिक्षा का अंत नहीं; अत: आप सभी को पूरे जीवनभर स्वयं तत्त्वज्ञान को सीखना है, यथासंभव प्रचार-प्रसार भी करना है। इसके पश्चात् सभी अध्यापकों को स्मृति-चिह्न प्रदान किये गये।

डॉ.शांतिकुमारजी पाटील ने परीक्षा परिणामों की घोषणा इसप्रकार की-

बालबोध प्रशिक्षण (हिन्दी) में 204 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 180 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिसमें 118 छात्र 75% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुये; 23 द्वितीय श्रेणी, 1 तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये।

बालबोध प्रशिक्षण (हिन्दी) में **प्रथम स्थान** अमी शाह रखियाल (98%) ने, **द्वितीय स्थान** स्वस्ति जैन मिरज (97%) व श्रेयांस संघवी पुणे (97%) एवं **तृतीय स्थान** सुनीता गांधी अहमदाबाद (96%) ने प्राप्त किया।

बालबोध प्रशिक्षण (अंग्रेजी) में 12 विद्यार्थियों ने एवं **प्रवेशिका प्रशिक्षण** में 5 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। सभी 17 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में 46 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 39 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिसमें 26 छात्र 75% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुये; 7 द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** रितिका जैन आरोन (96%) ने, **द्वितीय स्थान** रेखा बेन रखियाल (95%) व मुक्ति जैन अलीगढ (95%) ने और **तृतीय स्थान** स्वस्ति सेठी जयपुर (91%) ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. प्रतीति पाटील ने एवं संचालन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

सूरत प्रशिक्षण शिविर - कैमरे की नजर में...

शिविर उद्घाटन समारोह की कुछ झलकियाँ

विधान के दृश्य

ध्वजारोहण

मंचासीन महानुभाव

संकल्प दिवस पर डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन करते हुए

डॉ. भारिल्ल का विशेष साक्षात्कार

संकल्प दिवस के अवसर पर उपस्थित स्नातकगण

शिविर में उपस्थित सहस्राधिक साधर्मीजन

स्नातक प्रतिभा सम्मान समारोह की झलकियाँ

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

जो यूं धरम के नाम पर, तू व्यर्थ ही भूखा मरे
यदि नहीं जाना निजात्म को, तो देह भूखी क्या करे
भूखी मरे यह देह बस, कहलाये तू धर्मात्मा
तू त्यागता क्या भोजन, कभी करता नहीं यह आत्मा।। १०९।।

कब याद आती भोज्य की, व्यापार में यदि व्यस्त हो
भोजन तो उसको चाहिये, जो भूख से बस त्रस्त हो
निज आत्म के साधकों को, खाना याद ही आता नहीं
अनंतानंद को छोड़कर, क्या कोई कभी जाता कहीं।। ११०।।

तपना तपाना देह को, नहीं तप-त्याग नामक धर्म है
जब देह तू है ही नहीं, उसकी क्रिया न तेरा कर्म है
तब देह का ये परिणमन, आतमधरम हो सकता नहीं
धरम आत्मा का आत्मा में, ना अन्यत्र तुम खोजो कहीं।। १११।।

इस तरह हो जाते हैं उपवास –
ज्यों खेल के आनंद में, भोजन याद ही आता नहीं
चित खेल में ही रत रहे, भोजन उन्हें भाता नहीं
इस तरह आतम साधकों को, भूख भी लगती नहीं
पीड़ा न हो जब भूख की, हैरान वह करती नहीं।। ११२।।

निजआत्मा में लीन होता, जब साधकों का आतमा
तब कौन देखे देह को, जब हो दृष्टि में परमात्मा
आत्मा के साधकों को, सुध देह की आती नहीं
भोजन ग्रहण हो किस तरह, उस पर नजर जाती नहीं।। ११३।।

यह सत्य है यह सत्य है, जो त्याग भोजन का करे
तेरे पुण्य ही दो कौर का, नहीं आज पल्ले था अरे
यह संतुलित वस्तु व्यवस्था, तर्क से जो विचरता
हर कार्य का कारण सुनिश्चित, क्यों नहीं स्वीकारता।। ११४।।

इस तरह आतमलीन हो, तब देह जैसी परिणमे
उस देह के परिणमन को, व्यवहार से वे तप कहें
उत्कृष्ट होती देह की भी, दशा साधक काल में
अति संयमित सीमित रहे, दिनरात के व्यवहार में।। ११५।।

ना लक्ष्य की पहिचान है, ना मार्ग का निर्धार है
भटका हुआ पर मानता, निज को निकट भवपार है
अब लक्ष्य का निर्धार करके, मार्ग की पहिचान कर
एकांत दुःख संसार है, इस सत्य को स्वीकार कर।। ११६।।

भटकन अहो बढती अरे, मार्ग के अविचार से
ना पाओ तब तक मार्ग खोजो, निज विवेक विचार से
जो मार्ग सच्चा पा गये तो, काम पहिला हो गया
सन्मार्ग का निर्धार करके, मुक्ति पथिक तू हो गया।। ११७।।

अब छोड़कर जग दंद तू, लग जा गुरु की खोज में
जिनवाणि माँ भी शरण है, आदर्श गुरु के वियोग में
रे दौड़ से पहले जरूरी, सन्मार्ग का निर्धार है
यदि मार्ग ही ना उचित हो तो, दौड़ना बेकार है।। ११८।।

अध्ययन करो तुम शास्त्र का, दिन-रात ही चिंतन करो
संशय यदि उत्पन्न हो, श्रीगुरु की तुम शरण लो
गुरुदेव का संसार में, सब पर यही उपकार है
उन मुक्तिपथ प्रकाशकों को, वंदना शत बार है।। ११९।।

करती हरण संसार का, एक गुरु की ही शरण
गुरु एक नाविक नाव माता, दोनों ही भव संकट हरण
गुरु खोज में जो चूकता, वह डूबता मंझधार में
बस इसलिये भटका किया मैं, आज तक संसार में।। १२०।।

(क्रमशः)

35 स्थानों पर ग्रुप शिविर संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 22वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर दिनांक 26 मई से 2 जून तक महाराष्ट्र एवं महाकौशल प्रांत के 35 स्थानों पर आयोजित हुआ।

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, आचार्य अकलंक महाविद्यालय ध्रुवधाम, आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा एवं स्थानीय इसप्रकार कुल 65 विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में सभी स्थानों पर जिनेन्द्र पूजन, भक्ति, प्रवचन, बालकक्षाएं, प्रौढ कक्षाएं, विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से जैनधर्म के सिद्धांतों का ज्ञान कराया गया। विद्वानों में पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल आदि प्रमुख थे। शिविर में लगभग 2000 साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर का निर्देशन डॉ.राकेशजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित श्रुतेशजी सातपुते ने तथा संयोजन पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी विटालकर व पण्डित रवीन्द्रजी महाजन ने किया।

अर्हं पाठशाला का विशेष कार्यक्रम

सूरत (गुज.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर में संकल्प दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 24 मई को अर्हं पाठशाला द्वारा एक विशेष कार्यक्रम **'अन्तर्मन : डॉ. भारिल्ल संग'** आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अर्हं पाठशाला के गीत द्वारा हुआ। अर्हं पाठशाला की वर्तमान में उपयोगिता समझाते हुए एक लघु नाटिका का भी प्रस्तुतिकरण किया गया। जिनेन्द्रजी शास्त्री ने पाठशाला के पाठ्यक्रम की संपूर्ण जानकारी दी तथा अध्यापकों ने अपने अनुभव रखे। अर्हं पाठशाला के निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पाठशाला की वर्तमान में उपयोगिता को सिद्ध किया तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने पाठशाला की पूरी टीम व 2 महीने की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के साक्षात्कार के रूप में एक आकर्षक कार्यक्रम रखा गया, जिसके अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल के जीवनकाल, कार्यक्षेत्र, रीति-नीति और उनके जीवन संघर्षों जैसे पहलुओं पर ऐतिहासिक परिचर्चा की गई। डॉ. भारिल्ल से परिचर्चा विदुषी प्रतीति पाटील एवं आकाशजी शास्त्री अमायन द्वारा की गई।

दुबई में श्रुतपंचमी पर्व संपन्न

दुबई (यू.ए.ई.) : यहाँ अरिहंत मित्र मण्डल द्वारा श्रुतपंचमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा रचित श्रुतपंचमी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अरिहंत ज्ञानशाला के बच्चों ने जिनवाणी की शोभायात्रा द्वारा आकर्षक प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के 30-40 बच्चों ने जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता के अन्तर्गत जिनवाणी को सजाया। कार्यक्रम में लगभग 300 साधर्मियों ने लाभ लिया। अनेक साधर्मियों ने शास्त्र-स्वाध्याय का संकल्प लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. नीतेशजी शास्त्री एवं श्री आलोकजी ने कराये।

उपकार दिवस सानन्द संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ दिनांक 4 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 130वीं जन्मजयंती मनाई गई। इस अवसर पर जिनेन्द्र पूजन, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, शास्त्र स्वाध्याय आदि कार्यक्रम हुये। इसके पश्चात् देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, जिसमें 10 बालकों को प्रवेश दिया गया। सायंकाल दिगम्बर मुमुक्षु समाज एवं भारतवर्षीय धार्मिक संस्थाओं के लिये योगदान हेतु समग्र मुमुक्षु समाज तथा दक्षिण प्रांत शास्त्री स्नातक परिषद् द्वारा ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर एवं ब्र. यशपालजी जैन जयपुर का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम में देवलाली से लगभग 300 साधर्मीजन एवं ट्रस्टीगण एवं अन्य स्थानों से 250 साधर्मीजन इसप्रकार कुल 550 साधर्मीजन उपस्थित रहे।

दिनांक 5 मई को जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध्वजारोहण, मंगल कलश स्थापना विधि के पश्चात् पंचसिद्धक्षेत्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समाधिमरण विषय पर उद्‌बोधन हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई द्वारा गुरुदेवश्री की जन्मजयंती के अवसर पर उद्‌बोधन हुआ।

इस अवसर पर श्री गजपंथा फाउण्डेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास की उद्‌घाटन विधि संपन्न हुई। कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं श्री बसंतभाई दोशी ने अपने मनोगत व्यक्त किये। सभी का आभार प्रदर्शन श्री हेमंतजी बेलोकर, श्री सुनीलभाई शाह एवं सचिनभाई शाह ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट के निर्देशन में पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित शुभमजी शास्त्री गजपंथा एवं पण्डित सम्मेदजी जैन द्वारा संपन्न हुये।

शोक समाचार

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री महावीर प्रसादजी पहाड़िया का दिनांक 7 मई को 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

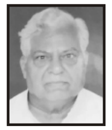

(2) जलगांव (महा.) निवासी पण्डित मधुकरजी का दिनांक 9 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं सरल परिणामी थे। आप गुरुदेव के समय से ही सोनगढ जाकर स्वाध्याय का लाभ लेते थे। आप अनेक पंचकल्याणकों में सह-प्रतिष्ठाचार्य रहे। आपने तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया।

(3) टीकमगढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती लाडकुंवर जैन ध.प. स्व.श्री स.सिं.कन्हैयालाल जैन दरगुंवा का दिनांक 12 जून को 86 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक प्रदीपजी शास्त्री जयपुर व प्रभातजी शास्त्री गोविन्दगढ की दादीजी थीं।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

द्वारा किया गया, जिसमें सैंकड़ों बच्चे सम्मिलित हुये।

कक्षाओं एवं प्रवचनों के अतिरिक्त विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 23 मई को **परमागम ऑनर्स** का विशेष कार्यक्रम, दिनांक 24 मई को **अर्हं पाठशाला** का विशेष कार्यक्रम एवं **डॉ. भारिल्ल का विशेष साक्षात्कार**, दिनांक 25 मई को **संकल्प दिवस, मुक्त विद्यापीठ का दीक्षान्त समारोह, स्नातक सम्मान समारोह एवं ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर का विशेष कार्यक्रम**, दिनांक 26 मई को **'समाधिमरण का स्वरूप'** विषय पर गोष्ठी, दिनांक 28 मई को पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा **'विकल्पों का मायाजाल'** विषय पर सेमिनार आयोजित हुआ।

इसप्रकार 53वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द संपन्न हुआ।

(उद्घाटन समारोह के समाचार पूर्व अंक (जून-प्रथम) में प्रकाशित किये जा चुके हैं।)

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 4 जून को रात्रि में श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल, जयपुर की अध्यक्षता में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजन समिति के पदाधिकारियों के साथ सभी प्रशिक्षक अध्यापकगण भी मंच पर उपस्थित थे।

अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार रखे। सभी ने प्रशिक्षण विधि की प्रशंसा करते हुये अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्प व्यक्त किया।

अन्त में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने संतोष व्यक्त करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि अभी जिन साधर्मियों ने आत्मविश्वासपूर्वक अपने भाव व्यक्त किये हैं, वैसे ही कार्य करें। हम सभी मिलकर एक ऐसे आत्मार्थी समाज का निर्माण करें जो स्वयं आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो, अन्य लोगों को इस मार्ग पर लायें और जो लोग इस मार्ग पर बने हुए हैं, उन्हें इससे च्युत न होने दें। इसी में हम सबका कल्याण निहित है। यही वह उपकार है जो जगत के समस्त जीवों के प्रति तीर्थंकर और गणधरदेव भी करते हैं।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अनेकान्तजी शास्त्री, संयोजन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा एवं संचालन अनुश्री जैन एवं मोक्ष जैन ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा
श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर में

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त से रविवार 11 अगस्त, 2019 तक)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का 42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 2 से 11 अगस्त तक लगने जा रहा है।

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अग. से 2 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com